VOL- VII ISSUE- I JANUARY 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. संगीता अग्रवाल
शोध निर्देशिका
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर

बबीता शर्मा
शोधकर्त्री,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर

सारांश

शिक्षक को मनुष्य का निर्माणकर्त्ता माना जाता है। शिक्षक वह धुरी है, जिसके चारों ओर पूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था घूमती है और विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णधार है। इनका नैतिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास अध्यापक पर ही निर्भर करता है। समाज में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अत: शिक्षकों को मूल्यों से युक्त होना आवश्यक है अर्थात् जितने मूल्यवान हमारे शिक्षक होंगे उतने ही मूल्यवान हमारे छात्र होंगे। मूल्यों में सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सुखान्त व राजनैतिक मूल्यों को लिया गया है। इन्हीं आयामों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन की सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है। न्यादर्श हेतु ६०० शिक्षकों (३०० पुरुष व ३०० महिला) का चयन किया गया है तथा आंकड़ों का संकलन करने हेतु डॉ. शमीम करीम का टिचर वेल्यू इन्वेन्ट्री का प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष रूप में प्राप्त किया गया कि राजकीय व गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया तथा न ही ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

प्रस्तावना

एक योग्य और कुशल शिक्षक ही बालक का उचित मार्गदर्शन कर सकता है। इसके लिए एक अध्यापक का मूल्यवान होना आवश्यक है अर्थात् जितने अधिक मूल्यवान हमारे शिक्षक होंगे उतने ही मूल्यवान हमारे छात्र होंगे, जो कि हमारे भावी कर्णाधार हैं। एक योग्य व कुशल शिक्षक ही बालक का उचित मार्गदर्शन कर सकता है। कुशल शिक्षक में एक नहीं अनेक गुण होने चाहिए, शिक्षकों को कुशल व प्रभावी बनाने के लिए मूल्यों की आवश्यकता पड़ती है।

शोधकर्त्री ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु शिक्षकों के मूल्यों को अध्ययन का विषय बनाया है, जो कि इस प्रकार है– "उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन।"

मूल्यों के संदर्भ में अलग–अलग विद्वानों ने अलग–अलग परिभाषाएँ दी है।

जॉन जे. काने के अनुसार– "मूल्य वे आदर्श, विश्वास या मानक है, जिन्हें समाज या समाज के अधिकांश सदस्य ग्रहण किये हुए होते हैं।"

आलपोर्ट के अनुसार– "मूल्य एक मानव विश्वास हे, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।"

अत: स्पष्ट है 'मूल्य' वे सामाजिक प्रतिमान, लक्ष्य अथवा आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्य ही व्यवहार का निश्चित मार्गदर्शक है, जो जीवन को एक निश्चित दिशा देते हैं, मूल्य ही व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं।

समस्या अभिकथन–

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन"

अध्ययन की आवश्यकता व महत्त्व

बालकों में विभिन्न मूल्यों के विकास में विद्यालय की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। विद्यालय समाज का लघुरूप है एवं अभिन्न अंग है। विद्यालय की स्थापना के पीछे मूल भावना यही है कि विद्यालय बालकों का सर्वांगीण व समुचित विकास समाज व देश की आवश्यकताओं के अनुसार करके इस योग्य बनाए कि वे कुशल व उपयोगी नागरिक बनाकर समाज व देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सके।

प्राचीन काल में वर्तमान समय तक बालक अनुकरण के माध्यम से सीखता चला आया है।

सामान्य रूप से अनुकरण की यह प्रक्रिया समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आचरण से ही प्रारम्भ होता है। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अध्यापक का स्थान सर्वोच्च होता है। वर्तमान समय में मूल्य संकट के चलते अध्यापक जितना मूल्यवान होगा, बालक भी उतने ही मूल्यवान होंगे। अध्यापक की कार्यशैली एवं व्यवहार बालकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाती है। प्रस्तुत शोध का महत्त्व इसलिए बढ़ जाता है कि इसके द्वारा शिक्षकों के मूल्यों का पता लगाना व मूल्यों का विकास करना। अत: शोधकर्त्री को शोध की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई है कि वर्तमान बदलती सामाजिक परिस्थितियों में अध्यापक स्वयं एक आदर्श रूप में प्रस्तुत होकर छात्रों में मूल्यों का विकास करने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा सके।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित निर्धारित किए गए हैं–

१. उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
२. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
३. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने उद्देश्यों पर आधारित निम्न शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है–

१. उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
२. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।
३. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में श्रीगंगानगर जिले के ६०० शिक्षकों को लिया गया है, जिसमें ३०० सरकारी व ३०० गैर सरकारी शिक्षक शामिल हैं। इसमें ३०० महिला एवं ३०० पुरुष शिक्षक हैं, जिसमें राजकीय के १५० ग्रामीण व १५० शहरी शिक्षक हैं और गैर राजकीय १५० ग्रामीण व १५० शहरी शिक्षक शामिल हैं।

उपकरण

इस शोध कार्य में आंकड़ों के संकलन हेतु प्रमापीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण करने हेतु मध्यमान मानक विचलन व क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

सारणी संख्या १
उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय व गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों को दर्शाती सारणी

क्र. सं.	शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
१	राजकीय शिक्षक	३००	२४८	१३.८५	१.२४६	०.४८	स्वीकृत
२	गैर राजकीय शिक्षक	३००	२४८.६०	१६.५५			

$Df = N_1 + N_2 - 2\ (300 + 300 - 2) = 598$

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमश: २४८ व २४८.६० है और मानक विचलन १३.८५ व १६.५५ है तथा क्रांतिक अनुपात ०.४८ है जो स्वतन्त्रता की कोटि ५९८ के आधार पर सारणी के स्तर ०.०५ के मान १.९६ से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में अंतर नहीं है।

अत: शून्य परिकल्पना "उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।" स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या २
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	शिक्षक	सख्या	मध्य मान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
१	ग्रामीण शिक्षक	१५०	२४७.६०	१४.५६	१.६८	०.७८	स्वीकृत
२	शहरी शिक्षक	१५०	२४८.९३	१४.७०			

$Df = N_1 + N_2 - 2\ (150 + 150 - 2) = 298$

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षको के मूल्यों के आधार पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमश: २४७.६० व २४८.९३ है और मानक विचलन १४.५६ व १४.७० है तथा क्रांतिक अनुपात ०.७८ है जो स्वतंत्रता की कोटि २९८ के आधार पर सारणी के स्तर ०.०५ के मान १.९६ से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में अन्तर नहीं है।

अत: शून्य परिकल्पना "राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।" स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या ३
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र. सं.	शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
१	ग्रामीण पुरुष	७५	२५०.२०	१५.४९	२.४२	१८२	स्वीकृत
२	ग्रामीण महिला	७५	२४५.८०	१४.२			

$Df = N_1 + N_2 - 2\ (75 + 75 - 2) = 148$

व्याख्या

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों के आधार पर प्रापत प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमश: २५०.२० व २४५.८० है और मानक विचलन १५.४९ व १४.२ है तथा क्रांतिक अनुपात १.८२ है जो स्वतंत्रता की कोटि १४८ के आधार पर सारणी के स्तर ०.०५ के मान १.९८ से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों में अन्तर नहीं है। अत: परिकल्पना "राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों से जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है–

१. उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में समानता पाई गई है क्योंकि राजकीय व गैर राजकीय शिक्षक दोनों ही विद्यार्थियों में मूल्यों की भावना विकसित करते हैं। उन्हें समाज में मूल्यों को बनाये रखने के लिए प्रेरित करते हैं। इस कारण उच्च माध्यमिक स्तर के राजकीय तथा गैर राजकीय शिक्षकों के मूल्यों में अंतर नहीं है।

२. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में समानता है क्योंकि ग्रामीण व शहरी दोनों ही स्तरों पर शिक्षकों ने विद्यार्थियों में समाज के मूल्यों को बनाये रखने के लिए प्रेरित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षक विद्यार्थियों में गांव के विकास निर्माण के लिए प्रेरित करते हुए गांवों के विकास को सुदृढ़ करते हैं। दोनों के केवल क्षेत्र में ही अंतर है इसलिए राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

३. राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों में समानता है क्योंकि पुरुष शिक्षक मूल्यों को विद्यार्थियों में विकसित करते हैं तो उसी तरह महिला शिक्षक भी मूल्यों को विकसित करने में पीछे नहीं होती। दोनों समाज के भविष्य को संवारने का कार्य करते हैं इसलिए राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ सूची

१.उपाध्याय, डॉ. पशुपतिनाथ:"विद्यामेघ– पारस्परिक मानवीय मूल्यों का संरक्षण आवश्यक" पृ.सं. ९–१०
२.शर्मा, डॉ. पूनम एवं : "विद्यामेघ– मूल्यहीन शिक्षा, समस्या कुमार मुकेश एवं समाधान" पृ. सं. ३१–३३
३.श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. :"सांख्यिकी एवं मापन" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा

पत्र–पत्रिकाएँ

१.भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई–दिसम्बर, २००८, पृ.सं. १९
२.नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका, प्रधान सम्पादक, सतीश कुमार जैन, पृ.सं. २३–२४
३.भारतीय शोध पत्रिका, जुलाई–दिसम्बर, २०१०
४.शिविरा पत्रिका, सितम्बर–२०१६, बीकानेर।